

हम और हमारी हिन्दी

मुझे लिखते हुए दुख हो रहा है कि जिस हिन्दी भाषा के उत्थान एवं प्रचार के लिए केन्द्रीय सरकार की तरफ से बड़े - बड़े संस्थानों द्वारा करोड़ों रुपये पानी की तरह बहाये जा रहे हैं, वहीं हमारे राष्ट्रीय कार्यकर्ता हिन्दी अस्पृश्यता रोग से उतने ही ग्रस्त हैं । आज हमारे सरकारी आला नेता, सरकार और सरकारी कर्मचारी फर्फटेदार अंग्रेजी बोलना अपनी शान समझते हैं । इसमें कोई सन्देह नहीं कि वे खद्वर पहनने लगे हैं, पर दिल में लेशमात्र भी हिन्दी के लिए जगह नहीं। किसी सभा / समिति की बैठक में चले जाइये। वहाँ तो ऐसा लगता है, जैसे वहाँ हिन्दुस्तान के लोगों की सभा नहीं बल्कि अँग्रेजों की मीटींग चल रही हो। हिन्दी भाषाई होने के बावजूद भी हिन्दी का एक लब्ज भी व्यवहार नहीं । जो जितना फर्फटेदार अँग्रेजी बोलेगा, वह उतना बड़ा नेता या आदमी कहलायेगा । अर्थात् वे हिन्दी बोलना , अपने सम्मान को छोटा करना समझते हैं। अपने बच्चों को हिन्दी नहीं, अँग्रेजी और सिर्फ अँग्रेजी बोलना सिखलाते हैं । जिससे समाज में अँग्रेजों का दर्जा मिले; हिन्दुस्तानी वेश -भूषा रहे मगर दिल इंगलिस्तानी बना रहे । पता नहीं, अँग्रेजी भाषा का यह जादू कब तक हमारे सरों पर सवार रहेगा । कब तक हम अँग्रेजी के गुलाम बने रहेंगे । इससे साफ पता चलता है कि इन साठ सालों में भी हम राष्ट्रीयता की गहराई तक नहीं पहुँच सके हैं ।

हमारे राष्ट्र निर्माता , महात्मा गाँधी को छोड़कर हमने किसी को हिन्दी के प्रचार - प्रसार पर जोर देते नहीं सुना । जब कि यह सर्व विदित रहे , जब तक हम अपनी राष्ट्रभाषा को दिल से नहीं अपनायेंगे, तब तक भारत को एक सुदृढ़ राष्ट्र के रूप में निर्माण महज़ एक ख्वाब होगा । हमारे उन्नत राष्ट्र की कल्पना तभी साकार होगी , जब हम जापानियों की तरह जापानी, चीनियों की तरह चीनी अर्थात् अपने भावों को हिन्दी में प्रकट करेंगे । आप दुनिया के किसी भी उन्नतशील देश में जाकर देखिए । उनका देश इतना प्रगतिशील क्यों है? कारण साफ है । वे लोग अपने भावों को अपनी राष्ट्रीय भाषा में एक दूसरे से आदान - प्रदान करते हैं ; न कि सामने

वाला अँग्रेजी जाने न जाने, उसकी चिंता छोड़ हम फर्माटेदार अँग्रेजी बोलते जा रहे हैं । हम सोचते हैं , अँग्रेजी के इन लब्जों को मेरे मुँह से सुनकर वे कुछ समझें ना समझें; मैं हिन्दुस्तानी कम अँग्रेज ज्यादा हूँ, ये तो समझ ही गए होंगे । भला ऐसे में हमारे देश का उत्थान कैसे हो सकता है । आप ईरान जाइये, रूस जाइये; हर देश की अपनी भाषाएं अलग- अलग हैं और सभी अपनी भाषा से उतना ही प्यार करते हैं, जितना एक शिशु अपनी माँ से । जब तक हम सभी भारतवासी अपनी भाषा के प्रति जागरूक नहीं होंगे, दिल और दिमाग से नहीं अपनायेंगे, अपने जीवन का अंग नहीं समझेंगे, तब तक हमारी हिन्दी भाषा ऐसे ही अपंग लड़खड़ाती, अँग्रेजी की बैसाखी के सहारे चलती रहेगी ।

किन्तु ही सज्जन तो बड़ी शान के साथ कहते हैं कि हिन्दी बोलना उनके लिए थोड़ी मुश्किल होती है , पर अँग्रेजी आसान है । बड़ा से बड़ा हिन्दुस्तानी भी जब भारत - भ्रमण पर आए अँग्रेजों से अँग्रेजी में बात करता है तो सुनकर दुख होता है । क्यों नहीं उसे ही हिन्दी बोलने दें।। जो नहीं बोल सकेंगे ,उनका भ्रमण अधूरा रहेगा। तभी वे अपने देश वापस लौटकर हिन्दी के बारे में सोचेंगे और दोबारा आने के पहले हिन्दी सीखकर आयेंगे । आजकल विश्व के हर देश में हिन्दी सिखाने के लिए स्कूल स्थापित किया गया है ,जिससे हिन्दी का प्रचार - प्रसार दूसरे देश में बढ़े । खैर अँग्रेजों से अँग्रेजी में बात करना किसी हद तक क्षम्य हो सकता है, लेकिन जब दो हिन्दुस्तानी ही आपस में अँग्रेजी में बात करे, तब भी क्या यह क्षम्य होगा ? नहीं, कभी नहीं ।

अगर कोई हिन्दुस्तानी हिन्दी लब्ज व्यवहार करने से हिचकिचाता है या इसमें अपना असम्मान बोध करता है तो उन्हें हिन्दुस्तान में रहने का हक नहीं मिलना चाहिए । बल्कि अच्छा हो कि वे अँग्रेजों के देश में जाकर बस जायें और वहीं अपनी अँग्रेजी झाड़ते रहें । हिन्दी हमारी मातृभाषा है । अपनी मातृभाषा में दिल के भाव को प्रकट करना सहज होता है । इसलिए हमें यह नहीं भूलना चाहिए --

‘हिन्दी हैं हम, हिंदोस्तां हमारा है ।’